P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-4* July- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

बौद्ध संघ के विकास में श्रावस्ती की भूमिका

वन्दना गुप्ता
शोधछात्रा,
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

सारांश

शब्बदा सब्ब पकरणं सावत्थियं समोहितं।
तस्मा सब्बमुपादाय सावत्थीति पवुच्चति।।

अर्थात् जो कुछ भी मनुष्यों के उपभोग परिभोग है सब यहाँ है। इसलिए इस स्थान को श्रावस्ती कहते है।

श्रावस्ती बहुत ही प्राचीन नगर है इसलिए इसे चन्द्रपुरी और सहेत–महेत भी कहा गया है। इसके प्रमाण हरिवंश पुराण, रामायण, पंचसूदनी, वायु पुराण, मत्स्य पुराण, महाभारत, विष्णु पुराण, अष्टाध्यायी, जैन ग्रन्थ, भागवत पुराण सहित आजकल के सभी सरकारी अभिलेखों में भी अंकित व प्रसिद्ध है।[1]

मुख्य शब्द : वर्षावास, सद्धर्म, अलौकिक, पुराभाषा, नैसर्गिक, प्रवज्या, सत्मार्गी, भग्नावशेष, विहार, शास्त्रार्थ।

प्रस्तावना

बौद्ध धर्म के आठ महातीर्थों में श्रावस्ती भी एक है जो बौद्ध साहित्य में 'सावत्थी' के नाम से विख्यात है। यह नगरी बहुत दिनों तक शक्तिशाली कौशल देश की राजधानी थी। बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार बुद्ध ने यहॉ चौबीस बार वर्षावास करके जनता को सद्धर्म का उपदेश दिया। मज्झिमनिकाय के 150 सूत्रों में से 65 तथा विनयपिटक के 350 शिक्षा–पदों में से 294 यहीं दिये गये थे श्रावस्ती का महत्व इसलिए भी है कि यहीं राजा प्रसेनजित के दरबार में बुद्ध ने अपने अलौकिक चमत्कार का प्रदर्शन भी किया था।[2]

शोध का उददेश्य

श्रावस्ती में बुद्ध के वर्षावास के समय ही पॉच सौ ब्राह्मणों का वास हुआ। उन्होंने बुद्ध द्वारा किये गये वर्णाश्रम व्यवस्था के व्यवहार पर प्रश्न किये जिसका उत्तर तथागत ने बड़े ही सहजता से दिये।[3] अशोक ने अपने धर्मयात्रा के दौरान श्रावस्ती की भी यात्रा की थी।[4] प्रस्तुत शोध पत्र में हम सिर्फ श्रावस्ती के विषय में ही चर्चा करेंगे।

शोध परिणाम

आवश्यकता की प्रत्येक वस्तु सुलभ होने के कारण इस नगर का नाम श्रावस्ती पड़ा। बुद्धघोष के अनुसार श्रावस्ती नामक ऋषि यहँ निवास करते थे उन्हीं के नाम पर इसका नाम रखा गया। ध्यातव्य हो कि व्याकरण की दृष्टि से यह नाम त्रुटिपूर्ण मालूम होता है क्योंकि पुराभाषा वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर इस विषय पर हाल ही में प्रकाश पड़ा कि यह स्थान मूलतः रहा होगा श्रयावस्ती जो अन्ततः कहलाने लगा श्रावस्ती। श्रयावस्ती परिचायक है श्री–वस्ती का। स्पष्ट है कि यह स्थल अपने नैसर्गिक सुषमा और समृधि के कारण सर्वथा श्री सम्पन्न रहा होगा। बुद्ध के जीवन काल में बौद्ध धर्म के प्रचार की दृष्टि से इस नगर का विशेष महत्व था, क्योंकि प्रथम चार निकायों में 87 सुत्तों और जातक की 416 कहानियों का उपदेश यहीं दिया गया। बुद्ध का सर्वाधिक सम्बन्ध इसी नगर से रहा।[5]

फाहियान ने बुद्ध की मौसी महाप्रजापति के भिक्षुणी संघाराम, सुदत्त अनाथपिण्डक द्वारा निर्मित जेतवन बिहार तथा अंगुलिमाल के प्रवज्या स्थान तथा अन्य कई स्थानों का उल्लेख किया है। हवेनसांग ने भी इन्हीं स्थानों का उल्लेख किया है। श्रावस्ती नगर के लिए प्रासाद नगर का उल्लेख किया गया है। जेतवन के दोनों द्वारों पर अशोक स्तम्भ, समीप ही बुद्ध की 5 फीट लम्बी मूर्ति, वह स्थान जहाँ बुद्ध ने एक रोगी की सेवा की थी। इसके अतिरिक्त चिंचा काण्ड का भी दोनों ही उल्लेख करते है। यह वही स्थान था जहॉ बुद्ध ने अन्य सम्प्रदाय वालों के साथ शास्त्रार्थ किया था।[6]

बौद्ध परम्परा में उन स्थानों के नाम गिनाये गये है जहाँ बुद्ध ने प्रतिवर्ष वर्षावास किये। कुल पन्द्रह स्थानों में बुद्ध ने सर्वाधिक वर्षावास, छब्बीस वर्षावास श्रावस्ती में व्यतीत किये और अनेक भिक्षु– भिक्षुणियों को दीक्षित किया।[7] श्रावस्ती

का प्रसिद्ध सेठ अनाथपिण्डक था जिसने राजगृह में बुद्ध का उपदेश सुना और घर्मानुयायी बना साथ ही श्रावस्ती पधारने का आमन्त्रण भी दिया जिसे तथागत ने मौन रूप में स्वीकार किया। श्रावस्ती में बुद्ध बिहार के निर्माण के लिए सबसे उपर्युक्त स्थान जेतकुमार का उद्यान लगा जिसे उन्होंने स्वर्ण मुद्राओं से ढककर खरीदा।[8]

बुद्ध के श्रावस्ती आगमन का एक बड़ा कारण अंगुलिमाल था जो भार्गव एवं मैत्रायणी का पुत्र था।[9] गुरू ने दक्षिणा स्वरूप एक सहस्र लोगों का वध करने को कहा था अतः वह लोगों को मारकर प्रमाण स्वरूप उनकी उँगली गले में पहन लेता था। बुद्ध की जब उससे मुलाकात हुई तो उसने उन तक पहुँचने की कोशिश की किन्तु असफल रहा अन्ततः बुद्ध के उपदेश से प्रभावित होकर उसने भी कासाय वस्त्र धारण कर लिया और प्रवज्या लेकर सत्मार्गी बन गया।[10]

श्रावस्ती में बुद्ध के प्रवास के दौरान जिन स्त्रियों को प्रवज्या प्राप्त हुआ वे है–

दासी पुत्री पूर्णिका, ब्राह्मणी आचार्या वेरहचन्ना, विनय धारिणी पटाचारा, आत्मदर्शी मल्लिका, पुरोहित पुत्री दत्तिका, किसा गौतमी, धर्मपरायणा धनंजानी और चाण्डाल कन्या प्रकृति।[11]

बुद्ध का तिरालिसवॉ वर्षावास श्रावस्ती के जेतवन में मूलगंध कुटीर विहार में हुआ इस समय बुद्ध ने गुण के आधार पर भिक्षु–भिक्षुणियों एवं उपासक–उपासिकाओं का वर्गीकरण घोषित किया प्रस्तुत शोध पत्र में हम सिर्फ श्रावस्ती के विषय में ही चर्चा करेंगे। बुद्ध ने श्रावस्ती में जिन प्रमुखों को बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए अग्रणी घोषित किया वे है–

1. कौशल कें श्रावस्ती में वैश्य कुल से सम्बन्धित अरण विहारियों में सुमति को अग्रणी घोषित किया।
2. श्रावस्ती के ही महाभोग कुल के ध्यानियों में कंखा रेवत को अग्रणी बनाया।
3. श्रावस्ती के ही ब्राह्मण कुल के श्रद्धावानों में वक्काली को अग्रणी बनाया।
4. उपर्युक्त कुल के ही प्रतिभावली कवियों में वंगीश अग्रणी हैं।
5. उपर्युक्त कुल के ही देवताओं के प्रिय विलिन्द वातस्य को अग्र बताया।
6. इसी कुल के प्रतिसंवित प्राप्तों में महाकोट्टिय को अग्र बताया।
7. इसी कुल के पूर्व जन्म का स्मरण करने वालों में शोभित को अग्र बताया।
8. श्रावस्ती के कुलगेह के भिक्षुणियों के उपदेशकों में नन्दक को अग्रणी बताया।
9. श्रावस्ती ब्राह्मण कुल के तेज धातु कुशलों में स्वागत अग्र है।
10. इसी कुल के रूक्ष चीवर धारियों में मोघराज को अग्र बताया।
11. कौशल के ही श्रेष्ठी कुल की पटाचारा को विनयघरों में अग्र घोषित किया।
12. श्रावस्ती कुल गेह की सोणा को आरब्धवीर्यो में अग्र बताया।
13. श्रावस्ती के ही वैश्य कुल की रूखा चीवर धारकों में कृषा गौतमी को अग्र घोषित किया।
14. श्रावस्ती सुमन श्रेष्ठी पुत्र उपासक दायकों में अनाथपिण्डक, सुदत्त व गृहपति अग्र है।
15. कौशल श्रावस्ती के श्रेष्ठी कुल के ही अत्यन्त प्रसन्नों में शूर अम्बष्ट अग्र है।
16. श्रावस्ती के वैश्य कुल की उपासिका दायिकाओं में विशाखा भृंगारमाता अग्र है।[12]

आधुनिक काल में श्रावस्ती के प्राचीन वैभव को प्रकाश में लाने का श्रेय जनरल कनिंघम को जाता है। 1862 में उन्होंने श्रावस्ती की खुदाई कराई जहॉ से 7 फुट 4 इंच की एक मूर्ति प्राप्त हुई जिस पर एक लेख प्राप्त हुआ जिससे यह स्पष्ट हुआ कि सेहट का क्षेत्र जेतवन और मेहट का क्षेत्र श्रावस्ती था। इस स्थल की खुदाई के परिणाम स्वरूप सभी पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हुए जिनमें सिक्के, मूर्तियॉ, भग्नावशेष आदि प्राप्त हुए।

निष्कर्ष

श्रावस्ती से प्राप्त महत्वपूर्ण भग्नावशेषों में जेतवन बिहार, पूर्वाराम, आनन्द बोधि, राजकाराम, गंधकुटी, गंधकुटी परिवेण, द्वार कोट्ठक, जेतवन पोक्खरणी, उपस्थान–शाला, स्नान कोट्ठक, जंताघर, जंताघर–शाला, आसन–शाला, सुन्दरी परिव्राजिका, परिखा, तीर्थकाराम, अंधवन और संकिस्सा या संकाश्य महत्वपूर्ण है।[13] इस प्रकार श्रावस्ती में हुए अधिकतम वर्षावासों और उनके द्वारा दीक्षित भिक्षु–भिक्षुणियों के माध्यम से बौद्ध धर्म के वैश्विक प्रचार–प्रसार में श्रावस्ती की भूमिका स्वतः ही सिद्ध होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *बुद्धमित्र भिक्षु, बुद्ध के समकालीन अनुयायी तथा बौद्ध केन्द्र, शकुन्तला प्रिन्टर्स, गोरखपुर, पृ0 311.*
2. *श्राम, सत्येन्द्र नाथ. गौतम बुद्ध जीवन, दर्शन और आधुनिक सन्दर्भ, प्रियंका प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 67–79.*
3. *मज्झिम निकाय, पृ0 389–390.*
4. *दिव्यावदान, पृ0 251, संस्कृत बौद्ध साहित्य में भारतीय जीवन, पृ0 75–76.*
5. *सिंह, दानपाल, भारत के प्रमुख बौद्ध केन्द्रः तथागत की चारिका से सम्बद्ध, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ0 55–66.*
6. *चंचरीक, कन्हैयालाल. गौतम बुद्ध जीवन और दर्शन, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0 123–124.*
7. *पाण्डेय, गोविन्द चन्द, बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, पृ055.*
8. *बुद्धचर्या, पृ0 63–67.*
9. *बुद्धकथा, पृ0 610–614.*
10. *अट्टकथा, मज्झिम निकाय, पृ0 356–360.*
11. *पिपलायन, मधुकर. बौद्ध महिलाओं के प्रेरणा प्रसंग, सम्यक प्रकाशन, पृ0 83–117.*
12. *बुद्धमित्र भिक्षु, बुद्ध के समकालीन अनुयायी तथा बौद्ध केन्द्र, शकुन्तला प्रिन्टर्स, गोरखपुर, पृ0 131–132.*
13. *सिंह, दानपाल, भारत के प्रमुख बौद्ध केन्द्रः तथागत की चारिका से सम्बद्ध, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ0 62–67.*

Social Research Foundation News Paper

It is a weekly news paper in Hindi language. We always prefer to publish **Stories / Poems / Articles / Book Reviews/ Social Problems or Local / National / International news.** Our main motto is to encourage the writing skills of new writers as well as intellectuals.

Also, **SRF** is going to start a new coloumn in **Swaichik Duniya** having only

Innovative Ideas of Research

from the **Research Scholars / Intellectuals** so that the thoughts could be elobrated in the interest of Society

कलम का नया आयाम

स्वैच्छिक दुनिया

कानपुर से प्रकाशित साप्ताहिक समाचार पत्र UPHIN/2014/55277

Social Research Foundation

Name	Periodicity	RNI No.	Indexed
Swaichhik Duniya (Hindi News Paper)	**Weekly**	**UPHIN/2014/ 55277**	Google scholar